श्रीमद् भागवत कथा में गोवर्धन लीला का किया वर्णन

भगवान श्रीकृष्ण ने कर्म भक्ति के साथ प्रकृति का संरक्षण करना भी सिखाया : बृजरत्न वंदनाश्री

पत्रिका
धर्म-कर्म

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

देवास. श्रीकृष्ण की लीलाओं में सबसे बड़ी गोवर्धन लीला है। इस लीला के पीछे अनेक उद्देश्य छिपे हुए हैं। श्रीकृष्ण ने मनुष्य को प्रकृति से प्रेम करना सिखाया है। पृथ्वी पर प्रकृति सुदृढ रहेगी तभी अच्छी वर्षा होगी। इसीलिए श्रीकृष्ण ने गोकुलवासियों से इंद्र की पूजा बंद करवाकर गिरिराज की पूजा करवाई, क्योंकि गिरिराज प्रकृति का संरक्षण करते हैं। भगवान कृष्ण ने गोवर्धन लीला के माध्यम से मनुष्य को प्रकृति के साथ जीना सिखाया। यह विचार कैलादेवी मंदिर में हो रही श्रीमद् भागवत में बृज रत्न वंदनाश्री ने व्यक्त किए। कथा में गोवर्धन की विविधता का चित्रण किया व दृश्य के माध्यम से गोवर्धन की पूजा दिखाई। वंदना श्री ने कहा कि गो का एक अर्थ है। इंद्रिया अर्थात इंद्रियों का वर्धन करना, दूसरा अर्थ ज्ञान अर्थात ज्ञान का संवर्धन करना। गो का एक अर्थ बुद्धि और स्वच्छता भी है और गो का एक अर्थ प्रकृति भी है। इसीलिए गो अर्थात गाय माता में समूचे देवताओं का वास भी माना जाता है।

मनमोहक झांकी प्रस्तुत की: कथा में गोवर्धन लीला के दृश्यमय वर्णन के साथ भगवान गोवर्धन की मनमोहक झांकी प्रस्तुत की गई। साथ ही छप्पन भोग लगाया गया। लगाए हुए भोग को कलाकारों ने समस्त श्रोताओं को प्रसाद के रूप में दिया। कृष्ण लीला में चीरहरण का चित्रण करते हुए महिलाओं को नदी की मर्यादा के बारे में बताया। रास लीला में बृज के कलाकारों ने श्रोताओं का मन मोह लिया। श्रीकृष्ण की रास लीला का यह सुंदर दृश्य अदभुत दिखाई दे रहा था। श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए थे। कृष्ण के मथुरा जाने का प्रसंग इतना मार्मिक था कि श्रोताओं की आंखों से अश्रुधारा बह गई। कथा में कंस वध, उद्धव के ज्ञान के अहंकार का मर्दन व कृष्ण के सांदिपनी आश्रम उज्जैन में विद्या अध्ययन का वर्णन किया गया। कथा में विशेष रूप से इंदौर के समाजसेवी प्रेमचंद गोयल, खरगोन से विनोद महाजन, सत्येंद्र जोशी, महेश अग्रवाल, संघ के प्रमुख कैलाश चंद्रावत, दिनेश तजेरा, मोहन विश्वकर्मा, धनेंद्रसिंह, कालूसिंह चौधरी, सुंदरलाल शर्मा, कैलाश मिश्रा, राजेश तिवारी, अनिलसिंह आदि उपस्थित थे। व्यासपीठ की पूजा मन्नूलाल गर्ग व परिवार ने की। कथा में बड़ी संख्या में महिला-पुरुष उपस्थित थे।